



epaper.vaartha.com

वर्ष-27 अंक : 343 (हैदराबाद, निजामाबाद, विशाखापट्टनम, तिरुपति से प्रकाशित) फालुन शु.7 2079 रविवार, 26 फरवरी 2023

प्रधान संपादक - डॉ. गिरीश कुमार संघी हैदराबाद नगर पृष्ठ : 16+32 मूल्य : 8 रुपये

स्वाद के संग,  
नीलोफर की तरंग !



समय बीतता गया... विश्वास बढ़ता गया...



शुद्ध सुगंधित पान मसाला

STATUTORY WARNING : CHEWING OF PAN MASALA MAY BE INJURIOUS TO HEALTH • NOT FOR MINOR • NO TOBACCO CONTAINS

BHAJES

A PRODUCT FROM R.K. PAN MASALA PVT. LTD.

FOR TRADE ENQUIRIES PLEASE CONTACT : **LAXMI TRADERS 9849576444**

















## तिरुपति शहर, किसने डाली नींव

देश-दुनिया में तिरुपति शहर धार्मिक-आध्यात्मिक केंद्र के तौर पर विख्यात है। तिरुपति आज अपना 893वां दिवस मना रहा है। आज ही की तारीख में सन1130 में इस शहर की स्थापना की गई थी। शहर की स्थापना ऐतिहासिक संदर्भों के आधार पर की गई थी। लिहाजा आज के दिन तिरुपति में खास उत्सव देखा जा रहा है। तिरुपति को मर्दिरों का शहर कहा जाता है। 893 साल पहले श्री वैष्णव संत भगवद रामानुजाचार्य ने गोविंदराजा रामानुज मंदिर की नींव रखी थी। जोकि शहर के बीच बीच स्थित है। इसी के साथ शहर को आध्यात्मिक केंद्र के रूप में ख्याति मिली। दुनिया भर में इस शहर और यहां के मर्दिरों की विशेष मान्यता है।

### मिल चुके हैं ऐतिहासिक प्रमाण

पिछले साल तिरुपति के नगर विधायक भूमना करुणाकर रेडी ने गोविंदराजा मंदिर के प्राचीन शिलालेखों को सामने रखा तो इस शहर की ऐतिहासिकता का बड़े पैमाने पर खुलासा हुआ। शिलालेखों से यह जानकारी सामने आई कि रामानुजाचार्य ने 24 फरवरी, सन1130 को इस शहर की आधारशिला रखी थी। ऐतिहासिक शिलालेख मिलने के बाद भूमना करुणाकर रेडी ने गोविंदराजा रामानुज मंदिर की नींव रखी थी। जोकि शहर के बीच बीच स्थित है। इसी के साथ शहर को आध्यात्मिक केंद्र के रूप में ख्याति मिली। दुनिया भर में इस शहर और यहां के मर्दिरों की विशेष मान्यता है।

### दुनिया भर में है प्रसिद्ध

अपनी स्थापना के बाद सालों साल तक मंदिर के आस-पास अलग-अलग समुदाय के लोग आते गए और बसते गए। इस तरह से तिरुपति शहर का विस्तार होता गया। आज की तारीख में तिरुपति देश में हिंदू पूजा पद्धति का एक प्रतिष्ठित तीर्थ स्थल है। यह दुर्गा के अंतर्मन में सुकृत और धूम पद्धति के बाद भगवद रामानुजाचार्य के आगमन से पहले तिरुपति के अस्तित्व के बारे में कोई जानकारी उपलब्ध नहीं है। हालांकि इसके ईर्द-गिर्द त्योहार मनाने के लिए कई तीर्थ स्थल के बारे में जरूर जानकारी मिलती है। लेकिन शहर के तौर पर इसकी स्थापना की सटीक जानकारी नहीं है।



## भावु सप्तमी आज

### रविवार को फाल्गुन महीने की सप्तमी का शुभ संयोग

इस दिन व्रत और सूर्य पूजा करने से दूर होती हैं परेशानियां

फाल्गुन महीने में सूर्य पूजा का अपना महत्व है। ग्रन्थों के मुताबिक इस महीने सूर्य को विष्णु रूप में पूजना चाहिए। रविवार को सप्तमी तिथि होने से भावु सप्तमी का योग बनता है, लेकिन फाल्गुन महीने में ऐसा संयोग कम ही बनता है। इस बार 26 फरवरी को ऐसा योग बनेगा। उपरे सूरज को अच्छे दें और बिना नमक का व्रत रखें।

### पूजा विधि

सूर्योदय से पहले नहाने के बाद तांबे के लोटे में शुद्धजल भर लें। उसके साथ ही लोटे में लाल चंदन, लाल फूल, चावल और कुछ गेहूं के दाने भी डाल लें। ऊंची गृही सूर्योदय नमः मंत्र बोलें और उत्तर हुए सूरज को इस लोटे का जल चढ़ाएं। इसके बाद भगवान भास्कर को नमस्कार करें। गावत्रों मंत्र का जाप करें और हांसे से सक्ते तो आदित्य हृदय स्तोत्र का भी पाठ करें। इसके अलावा भगवान सूर्य के 12 नामों का जाप भी कर सकते हैं।

### व्रत विधि

सूर्य के सामने बैठकर दिनभर बिना नमक का व्रत करने का संकल्प लें। संभव हो तो पूरे दिन तांबे के बर्तन का पानी पीएं। पूरे दिन व्रत रखें और फलाहर में नमक न खाएं। एक समय भोजन करें तो उसमें भी नमक का इत्तेमाल न करें। सूर्य का अच्छा देने के बाद श्रद्धालु और भोजन, वस्त्र, वस्त्र को इसी भी उपयोगी वस्त्र वान करें। गाय को चारा खिलाएं और अन्य पशु-पालियों को भी खाने की कोई वस्तु खिलाएं।

### दूर होती हैं वीमारियां

भावु सप्तमी पर सूर्य को जल चढ़ाने से बुद्धि का विकास होता है और मानसिक शांति मिलती है और वह अविकृत कमी भी अंदा, दृष्टि, दुखी नहीं रहता। सूर्य की पूजा करने से मनुष्य के सब रोग दूर हो जाते हैं। भावु सप्तमी के दिन दान करने से पुण्य बढ़ता है और लक्ष्मी भी प्रसन्न होती है। पूर्ण श्रद्धा और विश्वास के साथ यह व्रत करने से पिता और पुत्र में प्रेम बना रहता है। इस दिन सामर्थ्य के अनुसार गरीबों और ब्राह्मणों को दान देना चाहिए।



## इन 6 जगहों पर भूलकर भी न पहनकर जाएं रुद्राक्ष, अन्यथा लगेगा पाप



### रुद्राक्ष के प्रकार

रुद्राक्ष की माला में लगभग 1 से 21 रेखाएं (मुखी) होती हैं। ग्रावीन समय में तो 108 मुखी होते थे। वर्तमान में 30 मुखी मिलना भी संभव है। बता दें कि 80 प्रतिशत रुद्राक्ष में 4, 5 या 6 रेखाएं (मुखी) होती हैं। 1 लाखन वाले रुद्राक्ष कम मिलते हैं। रुद्राक्ष का आकार हार्षण मिलीमीटर में माप जाता है। नेपाल में रुद्राक्ष 20 से 35 मिमी (0 179 और 0 138 इंच) और इंडोनेशिया में 5 और 25 मिमी (0 120 और 0 198) के बीच के आकार के होते हैं।

रुद्राक्ष का अर्थ है रुद्र का अक्ष। यानी आंखों माना जाता है। यहां के उत्पत्ति भगवान शिव के अश्रुओं से हुई है। उन्होंने तप तप के बाद जब आंखे खोनी तो उनके आंखों से जो आंसू भूमि पर गिरे उसे रुद्राक्ष के शमशान के संत होते हैं वे रुद्राक्ष के उत्पत्ति हुई। रुद्राक्ष को शमशान की गई है। जोकि शमशान नहीं जाना चाहिए। जो शमशान के संत होते हैं वे रुद्राक्ष के उत्पत्ति हुई।

नियमों का पालन करते हैं।

**2. मृत्यु वाले धर:** जहां पर किसी की मृत्यु हो गई हो वहां पर भी रुद्राक्ष पहनकर जाना चाहिए। यदि आपके धर में किसी पर्वजन की मृत्यु हो गई है तो रुद्राक्ष को उतारकर किसी उचित स्थान पर रख देना चाहिए। सोने के दीर्घन जहां रुद्राक्ष के टूटने का अंदेशा रहता है वहां इससे रुद्राक्ष अशुद्ध और निस्तेज हो जाता है।

**3. शौचालय या स्नानघर:** टॉयलेट या बाथरूम में रुद्राक्ष पहनकर नहीं जाते हैं। ऐसा करने से धोर पाप लगता है। यह शिवजी का अपमान माना जाएगा।

**4. मांस मदिरा सेवन के समय:** रुद्राक्ष पहकर कर मास भक्षण करना या शराब पीना वर्जित है। इसी के साथ ही बुद्धाख्यने में जाना या किसी शाराब की दुकान पर जाना भी वर्जित है। जहां पर मुर्गा, बकरा आदि कटना या बनता है तुस स्थान से भी दूर रहें।

**5. बालक के जन्म पर:** जहां पर किसी बच्चे का जन्म हुआ हो और प्रसूत रहनी हो वहां पर रुद्राक्ष पहनकर जाना वर्जित है। एक माह तक नियम का पालन करना चाहिए। ऐसी जगह पहनकर जाने से रुद्राक्ष निस्तेज हो जाता है।

**6. शयन कक्ष:** सोने से पहले रुद्राक्ष की उत्पत्ति निवेश करने की सोच रहे हैं, तो अपने कुछ दिनों तक के लिए टाल दें। होलाष्टक में उन योगों का विशेष ध्यान रखना चाहिए। जो कमज़ोर होते हैं। कमज़ोर ग्रह और भी ज्यादा उग्र होते हैं। अब ऐसे में आपको उसके दृष्टिकोण से विशेष ध्यान रखना चाहिए। इससे उपर्युक्त धर्म के लोगों का आस्था को प्रमुख केंद्र है।

## होलाष्टक में उग्र ग्रह कौन-कौन से हैं?



1. होलाष्टक में नौ ग्रहों की पूजा करनी चाहिए।

2. आपको नवग्रह पीड़ाहर स्तोत्र का पाठ करना चाहिए।

3. ग्रहों की शांति के लिए उनसे जुड़ी वस्तुओं का दान जरूर करें।

4. ग्रहों के अशुभ प्रभाव से बचने के लिए ग्रहों के बीज मंत्र का जाप जरूर करें।

5. नमो भगवते वासुदेवाय मंत्र का जाप कम से कम 1008 बार करें और इस मंत्र से ही हवन करें।

इस साल होलाष्टक दिनांक 27 फरवरी से लेकर दिनांक 07 मार्च तक है। इस अवधि में कोई भी शुभ काम करने से बचना चाहिए। अगर आप कहीं निवेश करने की सोच रहे हैं, तो अपने कुछ दिनों तक के लिए टाल दें। होलाष्टक में उन योगों का विशेष ध्यान रखना चाहिए। जो कमज़ोर होते हैं। कमज़ोर ग्रह और भी ज्यादा उग्र होते हैं। अब ऐसे में आपको उसके दृष्टिकोण से विशेष ध्यान रखना चाहिए। इससे उपर्युक्त धर्म की मिल सकता है। इसलिए इन ग्रहों को शांतड़ करना बेहद जरूरी है। उग्र ग्रह को शांत करने के लिए जरूर करें ये उपाय

# करवा चौथ पर श्रीदेवी को चांद देखना था तो पायलट ने बदल दी फ्लाइट की दिशा

बॉलीवुड की पहली फीमेल सुपरस्टार श्रीदेवी को गुरुरे आज 5 साल पूरे हो गए। 24 फरवरी 2023 को दुबई के एक होटल में उनकी मौत बाथटर्ब में ड्रूबन से हुई थी। ये पूरे देश-दुनिया के लिए शांकिंग था, क्योंकि तब उनकी उम्र महज 54 साल थी। ये अंजीव संयोग है कि श्रीदेवी खुद अपनी बेटियों को बाथरूम लॉक नहीं करने दी थीं, इस बात का खुलासा करने के लिए शांकिंग था। ये पूरे देश-दुनिया के लिए शांकिंग था, क्योंकि तब उनकी उम्र महज 54 साल थी। ये अंजीव संयोग है कि श्रीदेवी खुद अपनी बेटियों को बाथरूम लॉक नहीं करने दी थीं, इस बात का खुलासा करने के लिए शांकिंग था। खुद उनकी मौत बाथरूम में गिरने से हुई।

श्रीदेवी हिंदी सिनेमा में एक करोड़ रुपए की फीमेल फिल्मों की एक फिल्म करियर 50 साल की थी। 4 साल की उम्र से फिल्मों में काम किया। हिंदी सिनेमा में श्रीदेवी एकमात्र वो एक्ट्रेस थीं, जिनका फिल्म में होना, हिट होने की गारंटी माना जाता था।

श्रीदेवी के लिए फैस में दीवानगी का ये आलम था कि एक बार करवा चौथ पर वो फ्लाइट से कहीं जा रही थीं और उन्हें चांद देखकर अपना ब्रत खोलना था। उन्होंने पायलट से इसकी गुजारिश की तो उसने फ्लाइट की दिशा बदल कर श्रीदेवी को चांद देखा दिया। श्रीदेवी की अंतिम बात भारत की चार सबसे बड़ी अंतिम यात्राओं में गिरी जाती है।

अब कहानी गौत के तीन दिन पहले

20 फरवरी 2018 को श्रीदेवी अपनी छोटी बेटी खुशी कपूर और पति बोनी कपूर के साथ भूतीजे मेहिहत मरावाली की शादी ऑटैड करने दुर्दृश्य थीं। शादी खत्म होने के बाद श्रीदेवी का अंतिम यात्रा भारत की चार सबसे बड़ी अंतिम यात्राओं में गिरी जाती है।

श्रीदेवी को लिए फैस में दीवानगी का ये आलम था कि एक बार करवा चौथ पर वो फ्लाइट से कहीं जा रही थीं और उन्हें चांद देखकर अपना ब्रत खोलना था। उन्होंने पायलट से इसकी गुजारिश की तो उसने फ्लाइट की दिशा बदल कर श्रीदेवी को चांद देखा दिया। श्रीदेवी तैयार होने के लिए उठीं और बोनी बेटी खुशी कपूर के साथ उसकी दिशा बदल दिया। श्रीदेवी की अंतिम यात्रा भारत की चार सबसे बड़ी अंतिम यात्राओं में गिरी जाती है।

अब कहानी गौत के तीन दिन पहले

ले

20 फरवरी 2018 को श्रीदेवी

अपनी छोटी बेटी खुशी कपूर और

पति बोनी कपूर के साथ भूतीजे

मेहिहत मरावाली की शादी ऑटैड

करने दुर्दृश्य थीं। शादी खत्म होने

के बाद श्रीदेवी कुछ दिन दुबई में

ही शांकिंग के लिए रुकना चाहती

थीं, क्योंकि उनकी बड़ी दिन पहले

को उनकी बड़ी बेटी जाह्नवी कपूर

का बर्थडे था और वो उसके लिए

पुलिस को सोचा गया। योस्टर्मॉट्टम

फिल्म किंधन करनाई में बौली

हुई।

श्रीदेवी को लिए फैस में दीवानगी

का ये आलम था कि एक बार

करवा चौथ पर वो फ्लाइट से

कहीं जा रही थीं और उन्हें चांद

देखकर अपना ब्रत खोलना था।

उन्होंने फ्लाइट की दिशा

बदल दी।

श्रीदेवी को लिए फैस में दीवानगी

का ये आलम था कि एक बार

करवा चौथ पर वो फ्लाइट से

कहीं जा रही थीं और उन्हें चांद

देखकर अपना ब्रत खोलना था।

उन्होंने फ्लाइट की दिशा

बदल दी।

श्रीदेवी को लिए फैस में दीवानगी

का ये आलम था कि एक बार

करवा चौथ पर वो फ्लाइट से

कहीं जा रही थीं और उन्हें चांद

देखकर अपना ब्रत खोलना था।

उन्होंने फ्लाइट की दिशा

बदल दी।

श्रीदेवी को लिए फैस में दीवानगी

का ये आलम था कि एक बार

करवा चौथ पर वो फ्लाइट से

कहीं जा रही थीं और उन्हें चांद

देखकर अपना ब्रत खोलना था।

उन्होंने फ्लाइट की दिशा

बदल दी।

श्रीदेवी को लिए फैस में दीवानगी

का ये आलम था कि एक बार

करवा चौथ पर वो फ्लाइट से

कहीं जा रही थीं और उन्हें चांद

देखकर अपना ब्रत खोलना था।

उन्होंने फ्लाइट की दिशा

बदल दी।

श्रीदेवी को लिए फैस में दीवानगी

का ये आलम था कि एक बार

करवा चौथ पर वो फ्लाइट से

कहीं जा रही थीं और उन्हें चांद

देखकर अपना ब्रत खोलना था।

उन्होंने फ्लाइट की दिशा

बदल दी।

श्रीदेवी को लिए फैस में दीवानगी

का ये आलम था कि एक बार

करवा चौथ पर वो फ्लाइट से

कहीं जा रही थीं और उन्हें चांद

देखकर अपना ब्रत खोलना था।

उन्होंने फ्लाइट की दिशा

बदल दी।

श्रीदेवी को लिए फैस में दीवानगी

का ये आलम था कि एक बार

करवा चौथ पर वो फ्लाइट से

कहीं जा रही थीं और उन्हें चांद

देखकर अपना ब्रत खोलना था।

उन्होंने फ्लाइट की दिशा

बदल दी।

श्रीदेवी को लिए फैस में दीवानगी

का ये आलम था कि एक बार

करवा चौथ पर वो फ्लाइट से

कहीं जा रही थीं और उन्हें चांद

देखकर अपना ब्रत खोलना था।

उन्होंने फ्लाइट की दिशा

बदल दी।

श्रीदेवी को लिए फैस में दीवानगी

का ये आलम था कि एक बार

करवा चौथ पर वो फ्लाइट से

कहीं जा रही थीं और उन्हें चांद

देखकर अपना ब्रत खोलना था।

उन्होंने फ्लाइट की दिशा

बदल दी।

श्रीदेवी को लिए फैस में दीवानगी

का ये आलम था कि एक बार

करवा चौथ पर वो फ्लाइट से

कहीं जा रही थीं और उन्हें चांद

देखकर अपना ब्रत खोलना था।

उन्होंने फ्लाइट की दिशा

बदल दी।

श्रीदेवी को लिए फैस में दीवानगी

का ये आलम था कि एक बार

करवा चौथ पर वो फ्लाइट से

कहीं जा रही थीं और उन्हें चांद

देखकर अपना ब्रत खोलना था।

उन्होंने फ्लाइट की दिशा

बदल दी।

श्रीदेवी को लिए फैस में दीवानगी

का ये आलम था कि एक बार

करवा चौथ पर वो फ्लाइट से













